लोकोत्सव → सभ्यता के आदिकाल से ही आध्यात्मिक पूर्ति तथा सांसारिक मन-बहलाव के लिए उत्सव, त्योहार व मेले आदि मनाये जाते रहे हैं। सभ्यता के विकास के साथ-2 इन उत्सवों और मेले में भी वृद्धि हुई है। उनको मनाने का समय व क्रम भी निश्चित किया गया है तथा मनाने का विधि-विधान भी सुनिश्चित हुआ है। ये उत्सव और मेले किसी भी देश की संस्कृति के परिचायक होते हैं। इनके साथ सामाजिक परंपराएँ भी जुड़ी रहती हैं। ये त्योहार और मेले सांसारिक उलझनों में फंसे हुए मनुष्य को कुछ समय के लिए ~~शारिर~~ शारीरिक व मानसिक आनंद प्रदान करते हैं। उनका मनोरंजन करते हुए उन्हें सामाजिक दायित्व का अहसास कराते हैं। इन मेलों और त्योहारों से जीवन में आशा और उत्साह का संचार होता है और जीवन में सरसता आती है। ये उत्सव और मेले उन महापुरुषों की पावन स्मृति में मनाए जाते हैं, जिन्होंने मानवीय आदर्शों का पालन करते हुए जन-कल्याण के निमित्त स्वयं को न्यौछावर करके लोगों के भौतिक कष्टों का निवारण किया तथा गौरक्षा एवं मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का भी बलिदान कर दिया। गोगाजी, पाबूजी, रामदेवजी (राम-सा पीर), मल्लिनाथ जी, जांभोजी, पीपाजी, तेजाजी आदि मुस्लिम के के साथ-2 पीर-पैगम्बरों सती-साध्वियों, लोक देवियों आदि के नाम पर भी मेले भरते हैं। राजस्थान के मेलों में देश के कोने-2 से लोग आते हैं। कुछ लोग व्यापार के उद्देश्य से आते हैं तो कई लोग लोक देवताओं एवं आदर्श महापुरुषों के दर्शन का लाभ उठाने के लिए आते हैं।

Scanned with CamScanner

जिससे राजस्थान वासियों के साथ उनका मेलजोल बढ़ता है। भाईचारा, धार्मिक सहिष्णुता, भावनी भावना, श्रद्धा, विश्वास, दान-पुण्य, परोपकार, सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता के दर्शन इन मेलों में होते हैं।

1.) गणगौर →

राजस्थान का एक प्रमुख उत्सव गणगौर है। गण अर्थात् शिव और गौरी अर्थात् गौरी, पार्वती। अतः गणगौर पर्व पर शिव व पार्वती की आराधना करके कुंवारियाँ अपने लिए उपर्युक्त वर की तथा पत्नियाँ अखण्ड सौभाग्य की कामना करती हैं। होली के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण से लेकर चैत्र शुक्ला तृतीया तक यह उत्सव चलता है। ईसर व गवर की मिट्टी की मूर्तियों को प्रतिष्ठित कर बालिकाएं एवं स्त्रियाँ उनकी पूजा करती हैं। होली के दूसरे दिन ज्वारे बोये जाते हैं तथा रोज सींचे जाते हैं। गवर ईसर की पूजा करके भोग लगाकर गीत गाए जाते हैं। चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी से घुड़ला उत्सव होता है। जिसमें कुम्हारिन के घर से छेदों वाली मटकी ली जाती है। उसमें दीपक जलाया जाता है, घुड़ले के कच्चा सूत बाँधा जाता है। फिर बालिकाएँ उसे सिर पर उठाकर चलती हैं तथा अन्य स्त्रियाँ गीत गाते हुए चलती हैं। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को लोटियाँ लायी जाती हैं। बालिकाएँ व स्त्रियाँ वस्त्र व आभूषणों से सजधजकर छोटे-2 कलश व लोटे लेकर तालाब पर जाती हैं, उनमें पानी भरती हैं, कुंमकुंम, गुरवा, नीम की पत्तियाँ व फूलों से सजाकर सिर पर रखती हैं तथा गीत गाती हुई आती हैं। और गवर ईसर के सामने लोटियाँ रखती हैं। तीज के दिन गणगौर की विशेष पूजा की जाती है। शाम को गणगौर की सवारी ठाठ-बाठ से निकाली जाती है और फिर मिट्टी की गणगौर को जल में विसर्जित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Date: / /

2) धींगा गवर →
धींगा गवर की पूजा विधवाएँ एवं सुहागिने दोनों करती है। चैत्र शुक्ला तीज से पूजा आरंभ की जाती है। दीवार पर धींगा गवर का चित्र बनाया जाता है, पास में गणेश जी का चित्र भी होता है। रात में औरतें नाचती-गाती हुई अन्य स्थानों पर प्रतिष्ठित धींगा गवर के दर्शन के लिए जाती है। कुछ औरतें स्वांग भी धारण करती है। फिर ब्रह्म बेला में धींगा गवर का जल में विसर्जन कर दिया जाता है। जोधपुर में यह मेला विशेष हर्षोल्लास से मनाया जाता है। रात में औरतें बेंत लेकर चलती है और सड़क के आजू-बाजू बैठे पुरुष रिश्तेदारों पर बेंत से हल्का-सा प्रहार करती है। इसीलिए ये बेंतमार धींगा गवर के नाम से भी प्रचलित है।

3) अक्षय तृतीया (आखातीज) →
राजस्थान में वैशाख शुक्ल तीज को अक्षय तृतीया (आखातीज) का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन साबुत अन्न (गेहूं, बाजरा) का खिचड़ा, गुड़ की गलवानी व बड़ी की सब्जी बनायी जाती है। इस दिन बिना मुहूर्त के विवाह होते है। छोटी-2 बालिकाएँ दूल्हा-दुल्हन बनकर घर-2 जाती है। और जब वे गीत गाती है तब उन्हें उन घरों से गेहूं, गुड़ और रुपए आदि दिए जाते है जो वे आपस में बाँट लेती है। उनके बदले वे बाजार से खाने की वस्तुएँ ले आती है। इस दिन छोटी जातियों में बाल-विवाह अधिक होते है।

4) गुरु पूर्णिमा → आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा राजस्थान में गुरु पूर्णिमा के रूप में मनायी जाती है। इस दिन सभी अपने-2 गुरु की पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त करते है।

5) कजली तीज →
भाद्रपद की कृष्ण तीज कजली तीज के रूप

Scanned with CamScanner

में मनायी जाती है। इसे बड़ी तीज भी कहा जाता है। इस दिन बालिकाएँ व सुहागिने व्रत करती है। शाम को निमड़ी की विधिवत पूजा करके बालिकाएँ सुंदरवर की कामना करती है तथा सुहागिने पति की लंबी आयु की कामना करती है तथा तीजमाता की कथा करती है। वे मंदिरों में दर्शन के लिए जाती है तथा झूला झूलती है। बाद में चंद्रमा के दर्शन कर सतु का भोग लगाती हैं।

6.) ऊभछट →

यह त्योहार भाद्रपद की कृष्णा छट को मनाया जाता है। इस दिन भी बालिकाएँ व औरतें व्रत रखती है। सूर्यास्त के समय नहा धोकर खड़े रहने का संकल्प करती है। जब तक चाँद के दर्शन नही होते तब तक वह खड़ी रहती है। इसीलिए यह ऊभछट कहलाती है। चंद्रमा के दर्शन के पश्चात ही वे उसकी पूजा - अर्चना कर नीचे बैठती है फिर सतु या भोजन खाती हैं।

7.) नागपंचमी →

ऊभछट के पहले दिन भाद्रपद कृष्ण पक्ष की पंचमी को नाग की पूजा की जाती है। घरों में दीवार पर काजल व कुमकुम से नाग की आकृति बनाकर नाग की पूजा की जाती है। दूध या खीर का भोग लगाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि नाग पूजा करने से सर्प नही काटता।

8.) जन्माष्टमी →

भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को कृष्ण-जन्माष्टमी मनायी जाती है। इस दिन सवेरे से रात में बारह बजे तक उपवास किया जाता है। बारह बजे श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाता है। बालगोपाल को भोग लगाकर थाली, घंटे, घड़ियाल बजाए जाते हैं। आरती उतारी जाती है। फिर व्रत करने वाले दूध, दही, घी, शहद, तुलसी

पत्र का पंचामृत लेते हैं।

गोगानवमी →
भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की नवमी गोगा-नवमी के रूप में मनायी जाती है। यह लोकदेवता गोगाजी की याद में मनायी जाती है। नाग के रूप में गोगाजी की पूजा की जाती है। गोगाजी के स्थान खेजड़ी के नीचे कच्चे चबूतरे पर होते हैं। गाँव-गाँव खेजड़ी, गाँव-गाँव गोगो कहावत यही सिद्ध करती है कि सभी जगह गोगा जी पूजनीय हैं। गोगाजी को चूरमा, सेवया की खीर का भोग लगाया जाता है।

10.) बाबा रामदेव की बीज →
जन्मतिथि
भाद्रपद शुक्लपक्ष की दूज बाबा रामदेव की बीज के रूप में मनायी जाती है। इस दिन रुणेचा में बड़ा भारी मेला लगता है। दूर-2 से लाखों श्रद्धालु यहाँ बाबा के दर्शन के लिए आते हैं। विशेषकर निम्न वर्ग के लोग बड़ी आस्था से यहाँ आते हैं। रातभर भजन-कीर्तन चलता है।

11.) गणेश चतुर्थी →
भाद्रपद की शुक्ल पक्ष चतुर्थी को गणेश चतुर्थी के रूप में मनाते हैं। इस दिन गणेश जी का जन्म हुआ था। अतः स्थान-2 पर गणेश जी की प्रतिमा स्थापित करके पूजा की जाती है तथा मोदक (मैदे से बना लड्डू) का भोग लगाया जाता है।

12.) नवरात्रि →
आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (एकम) से नवमी तक नवदुर्गा की पूजा की जाती है, इसे नवरात्रि कहा जाता है। नौ दिन तक व्रत करके दुर्गा की पूजा की जाती है, लापसी तथा चावल का भोग लगाया जाता है।

Scanned with CamScanner

दुर्गाष्टमी व नवमी को नौ ~~कुमार~~ कुंवारी /कुमारी कन्याओं को नवदुर्गा के रूप में मानते हुए भोजन कराया जाता है। जोधपुर दुर्ग में स्थित चामुण्डा माता के दर्शन के लिए लाखों लोग आते है। नौ दिन तक किले के दरवाजे खुले रहते है तथा श्रद्धालु आकर देवी को प्रसाद तथा नारियल चढ़ाते हैं।

13.) शिवरात्रि →

माघ कृष्णा त्रयोदशी को शिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है। लोक मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव ने विष पीया था, उसी की याद में शिवरात्रि मनायी जाती है। इस दिन शिव मन्दिरों में विशेष पूजा- अर्चना होती है। रात्रि में जागरण होता है और सभी लोग इस दिन व्रत करते है। भगवान शिव को बेर, गाजर, धतूरा, बेलपत्र चढ़ाते है।

(14) मकर संक्रांति ⇒

14 जनवरी को मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है। नक्षत्र शास्त्र के अनुसार मकर से सूर्य उत्तरायण हो जाते है जिससे दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती है। इस दिन लोग तिल व गुड़ खाते हैं और दान करते है मीठे गुलगुले व दाल के पकौड़े बनाकर कुछ गुलगुले सिर पर सात बार वार कर कुत्तों को खिला देते है और चारो दिशाओं में फेंक देते है। इसके पीछे मान्यता है कि अनिष्ठ का अंत होता है। फिर सभी लोग गुलगुले व पकौड़े खाते है। इस दिन कई स्थानों पर पतंगे उड़ायी जाती है। इस दिन तेरह वस्तुएँ दान में देने का रिवाज भी है।

(15) बसंत पंचमी ⇒

बसंत पचंमी माघ शुक्ला पंचमी को

जाती है। इस दिन से मौसम में परिवर्तन होने लगता है। बसंती हवा चलने लगती है और सर्दी कम हो जाती है और कहा जाता है –

बसंत पंचमी रा बाजा बाज्या साँप बिच्छु जाग्या

अर्थात सर्दी कम हो जाने से जीव-जन्तु अपने-2 बिलो से बाहर निकलने लगते है। होली के ढोल भी बजने लगते है। बसंत पंचमी के दिन पीले वस्त्र पहने जाते है और विद्या की देवी सरस्वती का पूजा की जाती है।

(ii) होली ⇒

हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार होली है। प्रेम, मस्ती एवं रंगों का त्योहार होली सभी लोग मनाते है। यो तो बसंत पंचमी से ही ढोल व चंग की गूंज सुनाई देने लग जाती है किन्तु होली के दिन तो सुबह से ही ढोल, चंग, नगाड़े बजने लगते है। लड़कों का झुण्ड मैदान में एक-दूसरे के तिलक लगाकर ढोल बजाते है। उस दिन घरों में विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाते है। छोटे बच्चे गुलाल उड़ाते है तथा रंग डालते है। बहने अपने भाई के सिर पर फूलों की माला वार कर प्रहलाद को पहनाती है। मैदान में लकड़ियाँ, उपले आदि इकट्ठे करके रखे जाते है तथा उनके बीचो-बीच पेड़ की लकड़ी प्रहलाद के रूप में रखी जाती है। जब होलिका दहन किया जाता है तो प्रहलाद को बाहर निकाल दिया जाता है। इसका कारण यह है कि भक्त प्रहलाद की बुआ होलिका उसे गोद में लेकर बैठ गई और दहन किया गया तो होलिका जल गई और प्रहलाद बच गए। उसी की स्मृति में होलिका दहन किया जाता है। दहन के समय नगाड़े बजते है। पुरुष व लड़के टोलियाँ बनाकर ढोल, चंग बजाते हुए मोहल्ले में जाते है और फाग गाते है। इन्हें गेरिए कहा जाता है। रातभर इनका यही क्रम चलता है। दूसरे दिन धुलण्डी होती है। जिसमें लोग परस्पर रंग डालते है, मस्ती में गाते है,

Scanned with CamScanner

नाचते हैं, दोपहर एक-दो बजे तक रंगों का दौर चलता है फिर सभी नहाकर साफ-सुथरे कपड़े पहनकर एक-दूसरे के घर रामा-शामा करने जाते हैं।

(17) शीतलाष्टमी →

चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी को शीतलाष्टमी मनायी जाती है। इस दिन शीतला माता की पूजा की जाती है। शीतला माता स्वयं दूसरों के अशुभ को धारण कर लोगों के शरीर को स्वस्थ व नीरोग रखती है। शीतलामाता की कृपा से चेचक रोग नहीं होता। इसलिए लोग बड़ी श्रद्धा से शीतला माता की पूजा करते हैं। पहले दिन का बनाया भोजन का माता को भोग लगाते हैं। मेहन्दी, कुमकुम व दूर्वा आदि से माता की पूजा, अर्चना करते हैं ताकि माता को ठण्डक प्राप्त हो, उन्हें शरीर की गर्मी से मुक्ति मिले। इसलिए उस दिन घरों में चूल्हा नहीं जलाया जाता है। शीतला माता के मंदिर में श्रद्धालु दर्शन करने के लिए जाते हैं। *चाकसू में शीतलामाता का मंदिर है तथा जोधपुर में भी कागा की पहाड़ी पर माता का मंदिर है, यहां पर मेला भरता है।

इन लोक उत्सवों के अलावा महापुरुषों की जयंती, व्रत व उपवास के अवसर पर भी उत्सव मनाया जाता है इनमें महावीर जयंती, नृसिंह जयंती, हनुमान जयंती, बुद्ध जयंती आदि प्रमुख हैं। व्रत के उत्सवों में- अमावस्या व्रत, निर्जला एकादशी, देवझूलनी एकादशी, सावनी तीज, ऋषिपंचमी, अनंत चतुर्दशी, आंवला एकादशी आदि उल्लेखनीय हैं।

—*—*—